

नवभारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्‍वरी| प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्‍वरी

सुप्रीम कोर्ट ने चंबल और केन नदी में रेत खनन से जुड़े मामलों की सुनवाई करते हुए नदी तल से रेत निकालने के विनाशकारी प्रभावों पर गंभीर चिंता जताई है. कोर्ट ने कहा है कि रेत खनन से नदी का प्रवाह प्रभावित होता है और इसका सबसे खराब असर नदी के इकोसिस्टम पर पड़ता है. राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य में अवैध रेत खनन और संकटग्रस्त जलीय जीवों को खतरे के मामले में कोर्ट का स्वतः संज्ञान इस बात का संकेत है कि समस्या अब केवल खनन नियमों के उल्लंघन तक सीमित नहीं रही है.

दरअसल,नदियां केवल पानी के बहाव का माध्यम नहीं हैं, बल्कि प्रकृति के पूरे संतुलन का आधार होती हैं. नदी का जल, उसका तल, रेत, किनारे, वनस्पति और उसमें रहने वाले जीव एक-दूसरे से गहरे जुड़े होते हैं. इनमें से किसी एक कड़ी के साथ छेड़छाड़ का असर पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है. इसलिए नदी तल से अनियंत्रित रेत खनन को केवल अवैध कारोबार या राजस्व के नुकसान के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है. यह प्रकृति

सुप्रीम कोर्ट की चिंता का संज्ञान लें सरकारें

के साथ होने वाला ऐसा हस्तक्षेप है, जो आने वाले समय में गंभीर पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बन सकता है. चंबल जैसी नदी में रेत का अपना प्राकृतिक महत्व है. यह नदी के प्रवाह, जल धारा क्षमता और जलीय जीवों के आवास से जुड़ी होती है. रेत की परतों में बदलाव नदी के प्राकृतिक स्वरूप को प्रभावित कर सकता है. इसका असर घड़ियाल सहित उन अनेक जीवों पर पड़ता है, जिनका जीवन नदी के प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर है. केन नदी का मामला भी इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण है. यदि नदियों के तल को लगातार खोदा जाता रहा तो हम केवल रेत नहीं निकाल रहे होंगे, बल्कि प्रकृति की उस व्यवस्था को कमजोर कर रहे होंगे, जिसे बनने में सदियों लगी हैं.

सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से दो साप्ताह में अनुपालन हलफनामा मांगा है. तीनों राज्यों को बताना होगा कि राष्ट्रीय चंबल

घड़ियाल अभयारण्य और उसके आसपास अवैध रेत खनन रोकने के लिए पहले दिए गए निर्देशों पर कितना अमल हुआ. मई में कोर्ट ने वन विभाग का मैदानी अमला बढ़ाने, रिक्त पद भरने तथा अवैध खनन और परिवहन में इस्तेमाल वाहनों और मशीनों के खिलाफ लगातार और समन्वित कार्रवाई के निर्देश दिए थे. कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया था कि कार्रवाई केवल वाहन चालकों तक सीमित न रहे, बल्कि वाहन मालिकों, फाइनेंसरों, ऑपरेटरों, ठेकेदारों और संगठित अवैध खनन नेटवर्क तक पहुंचे.

यह निर्देश इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि प्रकृति के विनाश का कारोबार किसी एक टुक या मशीन से नहीं चलता . इसके पीछे पुरा नेटवर्क काम करता है . जब तक उस नेटवर्क पर प्रभावी कार्रवाई नहीं होगी, तब तक नदी के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जारी रहेगा . कुछ वाहनों की जब्ती और कुछ लोगों की

गिरफ्तारी से समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता . दरअसल, विकास और निर्माण के लिए रेत की आवश्यकता अपनी जगह है, लेकिन इसकी पूर्ति का तरीका प्रकृति के अस्तित्व की कीमत पर नहीं हो सकता . सरकारों को वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर यह तय करना होगा कि कहां और कितनी मात्रा में खनन पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित है . नदी की वहन क्षमता, जल प्रवाह, जलीय जीवों के आवास और आसपास के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन किए बिना खनन की अनुमति देना दूरगामी नुकसान को आमंत्रित करना है .

बहरहाल,चंबल और केन से रेत निकालकर आज कुछ आर्थिक लाभ भले हासिल कर लिया जाए, लेकिन यदि इसके कारण नदी का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है तो इसकी कीमत आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी . प्रकृति को नष्ट करके किया गया विकास अंततः विकास नहीं, विनाश का रास्ता बन जाता है . नदियों को बचाना पर्यावरण संरक्षण का विषय भर नहीं, बल्कि मानव जीवन और भविष्य की सुरक्षा का सवाल है .

वैज्ञानिकों ने दिमाग के अंधेरे में रोशनी की दस्तक दी

दिमाग हमारे शरीर का वह हिस्सा है, जिसे हम हर क्षण इस्तेमाल करते हैं. जानते हुए भी और न जानते हुए भी. लेकिन आजतक हम पूरी तरह से इस दिमाग को ही नहीं समझ पाए हैं. जिस दिमाग ने दुनिया के अनंत रहस्यों को खोला है, आखिर उसके अपने रहस्य अभी पूरी तरह से क्यों नहीं खोले जा सके हैं ? मसलन हम सोचते कैसे हैं, किसी चेहरे को देखते ही हमें उससे जुड़ी क्वी वचों पुरानी स्मृतियां क्यों तत्क्षण ताजा हो जाती हैं ? कोई आवाज या गंध, आखिर कैसे हमारे अतीत के रहस्यों को पलक झपकते ताजा कर देती हैं ? साथ ही यह सहज सवाल कि आखिर क्यों विचार हमारे मस्तिष्क को कैसे सक्रिय कर देता है ? इन सवालों को खोजने की यात्रा में विज्ञान ने अब एक महत्वपूर्ण दरवाजा खोला है. 2026 का चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार पीटर हेगेमैन, जॉर्ज नागेल और कार्ल डिसेरंथ को प्रकाश-संवेदी आयन चैनलों और ऑप्टोजेनेटिक्स से संबंधित उनके काम के लिए दिया गया है.

इन वैज्ञानिकों की खोजों ने प्रकाश की मदद से विशिष्ट तंत्रिका कोशिकाओं की गतिविधि को नियंत्रित करने का एक रास्ता दिखाया है. स्टैनफोर्ड के डिसेरंथ, बर्लिन के हेगेमैन, बूर्जबर्ग के नागेल की खोज ऑप्टोजेनेटिक्स ने न्यूरोसाइंस की दिशा ही बदल दी है. इस तकनीक का प्रकाश-चालित ऐसे स्विच मिलते हैं, जिनसे दिमाग की नर्वसेंस और सर्किट को नियंत्रित कर ब्रेन

न्यूरोसाइंस की दिशा बदली

2026 के चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार इसी रोशनी की एक महत्वपूर्ण किरण है. अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि इससे हम मस्तिष्क के हर रहस्य को पढ़ सकेंगे. हो सकता है ऐसा कभी संभव ही न हो. क्योंकि मस्तिष्क केवल कोशिकाओं और विद्युत संकेतों का संग्रहभर नहीं है. इससे हमारी चेतना, हमारी स्मृतियां, हमारी भावनाएं और हमारी मनुष्यता जुड़ी हुई है लेकिन विज्ञान का काम सारे उत्तर एक साथ हासिल करना नहीं है, उसका काम अंधेरे में अगला कदम देखना है और मस्तिष्क के अंधेरे में वह अगला कदम अब प्रकाश ने दिखाया है.

फंक्शन, व्यवहार और बीमारियों को समझा जा सकता है. इसकी शुरुआत हेगेमैन हरे शैवाल के रोशनी की ओर तैरने के रहस्य को सुलझाने के साथ हुई. हेगेमैन और नागेल ने एक ऐसा प्रोटीन खोजा जो नीली रोशनी पड़ने पर आयन चैनल खोलकर इलेक्ट्रिकल हलचल पैदा करता है. जबकि डिसेरंथ ने इसी जीन का उपयोग करके जीवित चूहों के दिमाग में नर्वसेंस के लिए एक लाइट कंट्रोल स्विच तैयार किया. हमारा मस्तिष्क अरबों न्यूरॉन का एक ऐसा जटिल संसार है, जिसमें हर क्षण असंख्य विद्युत और रासायनिक संकेत दौड़ रहे होते हैं.

हम किसी चीज को जब देखते हैं, तो उसका एक निश्चित अर्थ निकालते हैं और उसी अर्थ के मुताबिक अपनी प्रतिक्रिया करते हैं. यह वही क्षण होता है, जब हमारे भीतर भावनाओं और स्मृतियों की भी अपनी अनेक गतिविधियां चल रही होती हैं.

अभी तक समस्या यह रही है कि इतने जटिल नेटवर्क में किसी एक न्यूरॉन या न्यूॉन्स के समूह की वास्तविक भूमिका को अलग करके समझना बेहद कठिन था. यहीं पर इस नोबेल पुरस्कार जीतने वाले वैज्ञानिकों की खोज की अहमियत सामने आती है. पीटर हेगेमैन और जॉर्ज नागेल ने एक सूक्ष्म एक कोशिकीय शैवाल में प्रकाश के प्रति संवेदनशील प्रोटीनों की प्रकृति को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

कार्ल डिसेरंथ के काम ने इस दिशा को मस्तिष्क के अध्ययन तक पहुंचने में निर्णायक भूमिका निभाई. प्रकाश-संवेदी प्रोटीनों को विशिष्ट न्यूरॉन्स में इस्तेमाल करके वैज्ञानिक अब प्रकाश की मदद से उन कोशिकाओं को सक्रिय या निष्क्रय कर सकते हैं. कहने का मतलब यह कि जिस मस्तिष्क को अब तक बाहर से देखा जाता था, अब उसके भीतर की गतिविधियों को



2026 के चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार इसी रोशनी की एक महत्वपूर्ण किरण है. अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि इससे हम मस्तिष्क के हर रहस्य को पढ़ सकेंगे. हो सकता है ऐसा कभी संभव ही न हो. क्योंकि मस्तिष्क केवल कोशिकाओं और विद्युत संकेतों का संग्रहभर नहीं है. इससे हमारी चेतना, हमारी स्मृतियां, हमारी भावनाएं और हमारी मनुष्यता जुड़ी हुई है लेकिन विज्ञान का काम सारे उत्तर एक साथ हासिल करना नहीं है, उसका काम अंधेरे में अगला कदम देखना है और मस्तिष्क के अंधेरे में वह अगला कदम अब प्रकाश ने दिखाया है.

भी बेहद सूक्ष्मता से छूने और नियंत्रित करके समझने का रास्ता खुला है. किसी न्यूरॉन को किसी व्यवहार के द्वारा सक्रिय देखना एक बात है, लेकिन उसी न्यूरॉन को नियंत्रित करके यह देखना कि उसके सक्रिय होने से व्यवहार में आखिर क्या परिवर्तन आता है, यह बेहद महत्वपूर्ण दूसरी बात है.

वास्तव में यहीं से मस्तिष्क के उन रहस्यों तक पहुंचने की संभावनाएं पैदा होती हैं, जिनका संबंध हमारे सबसे निजी अनुभवों से है. मसलन डर, आनंद, स्मृति, प्रेरणा, आदत और सबसे महत्वपूर्ण हमारे किए जाने वाले व्यवहार तक. ऐसे में सवाल सिर्फ यह नहीं है कि इस रोशनी से हम दिमाग को कितना समझ पाएंगे ? असली सवाल यह है कि इस समझ का इस्तेमाल हम मनुष्य के जीवन को कितना बेहतर बनाने में कर पाएंगे ?

—लोकमित्र गौतम

महाकौशल की डायरी

कांग्रेसी हुए मुखर, भाजपाई खेमे में बड़ी बेचैनी ...



अविनाश दीक्षित

में संंध लगाना हो या फिर बालाघाट में पीड़ित आदिवासियों के बीच जाकर भाजपा सरकार को तस्खीर सभी को बताना हो... ये सभी प्रदर्शन इन दिनों जबलपुर सहित महाकौशल के विभिन्न शहर और ग्रामीण अंचलों में अब तक कांग्रेस को संजीवनी बूटी मिलने जैसे साबित हुए हैं. जबलपुर में लगभग कुम्भकरणी नंदा में डूबी कांग्रेस अचानक आक्रामक मूड में नजर आने लगी है.

हालिया दिनों में जिस तरह भाजपा सरकार के खिलाफ कांग्रेसियों का हुजूम सड़कों पर उमड़ा और जिसने जहां एक ओर शहर की जनता का ध्यान आकर्षित किया वहीं दूसरी ओर भाजपा के खेमे में भी बेचैनी बढ़ा दी है . राजनैतिक जानकारों का मानना है कि पिछले कुछ महीनों से जिस प्रकार से कांग्रेस एक नई क्रांति लेकर सड़कों पर उमड़ी है उससे



लगे हैं कि इस बार विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और भाजपा की कशमकश जोरदार होने वाली है. उधर भाजपाई खेमे में राहुल गांधी के मध्यप्रदेश में लगातार सक्रिय होने को लेकर भी गुप्तचुप तरीके से चर्चाएं हो रही हैं और रूपरेखा तय होने लगीं हैं कि मप्र में समय रहते अब भाजपा को भी नामी या बड़े चेहरे को रोड शो या सक्रियता दिखाने सामने आना होगा.. नहीं तो ऐसा न हो कि कहीं देर हो जाए और जनता के बीच कांग्रेस पूरी तरह चुसपैट कर ले.

3 साल में सामने आए कुलसचिव के 9 चेहरे

अभी तक हुए लगातार बदलाव ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्थाओं को झंकझोर कर रखा हुआ है, हालिया बदलाव के बावजूद सवाल उठ रहे हैं कि खेमों में बटी वि्वि की प्रशासनिक व्यवस्था क्या अब पटरी पर वापस लौट पाएगी ... दरअसल कुलगुरु प्रोफेसर राजेश वर्मा के 3 साल के कार्यकाल में वि्वि के कुलसचिव का 9 बार बदले जा चुके हैं. पिछले कुछ महीनों से शहर से लेकर भोपाल तक किसी न किसी मुद्दे को लेकर सुर्खियों में बने रहने वाले कुलगुरु की कुर्सी पर आंच नहीं आना भी लोगों को हजम नहीं हो रहा है. वि्वि के गलियारों में गुप्तगुप्त चर्चाें हो रही है कि साहब ने तो गजब की सेटिंग जमाई है, तभी तो उनका बाल बांका नहीं हो रहा है. शैक्षणिक जानकार कई खामियां बताकर रहे हैं, वहीं छात्र संगठन भी संतुष्ट नजर नहीं आ रहे हैं. प्रदर्शन, आरोप- प्रत्यारोप की झड़ी के बीच कुलगुरु - कुलसचिव का तालमेल सियासी तानेबाने में उलझ रहा है. अंत में नतीजा ये हो रहा है कि कुलसचिव का स्थानांतरण कर दिया जाता है. विदित रहे कि प्रो. वर्मा के कार्यकाल के दौरान अब नौवें कुलसचिव डॉ. डीके बग्गा अपनी जिम्मेदारी का निभाएंगे. कुलसचिव की कुर्सी लगातार बदलाव के केंद्र बनी रही . स्मरण रहे कि दिसंबर 2023 में प्रो. वर्मा के कुलापति पद संभालने के बाद से अब तक कुलसचिव पद पर नियमित नियुक्ति के साथ-साथ प्रभार की व्यवस्थाएं भी बदलती रही हैं. उपलब्ध आदेशों और विश्वविद्यालय से जुड़ी जानकारी को देखें तो इस अवधि में कुलसचिव पद की व्यवस्था में करीब 9 बार बदलाव हुआ है. दिसंबर 2023 से अक्टूबर 2026 तक कुलसचिव पद की पूरी कड़ी को देखें तो डॉ. दीपेश मिश्रा, डॉ. संतोष जाटव, डॉ. राजेंद्र कुमार कुररिया, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. राजेंद्र कुमार बघेल, डॉ. सुशील कुमार दुबे, डॉ. रविशंकर सोनवाल और अब डॉ. डीके बग्गा के नाम सामने आये . इनमें डॉ. सुरेंद्र सिंह ने अलग-अलग समय पर दोबारा प्रभार संभाला, जबकि डॉ. सुशील कुमार दुबे ने भी बीच-बीच में प्रभारी के तौर पर जिम्मेदारी निभाई . यानी तीन साल के भीतर कुलसचिव की कुर्सी पर स्थायी नियुक्ति से लेकर प्रभार तक लगातार बदलाव हुआ . सवाल ये भी खड़े हुए कि आखिर ऐसा क्या था कोई भी कुलचिव वि्वि में लंबी पारी नहीं खेल पाया. यही सवाल नये कुलसचिव के आने के बाद भी बरकरार है .



निशानेबाज

सुई में लगा धागा, चोर निकल के भागा, राहुल गांधी को लिखा जाता है ‘रागा’



लेकर मोदी, शाह और भागवत तक के कानों में गूंजने लगी है. विपक्ष गोलबंद होकर इस संगीत की बेमिसाल बंदिश पेश कर रहा है. '

कभी नौकरी पाने की सबसे बड़ी सीढ़ी डिग्री हुआ करती थी. विश्वविद्यालय की डिग्री हाथ में आते ही यह उम्मीद बंध जाती थी कि रोजगार का रास्ता खुल जाएगा. लेकिन कुटुम्ब बुद्धिमता (एआई) ने रोजगार की इस पुरानी तस्वीर में बड़ा बदलाव कर दिया है. अब सवाल केवल यह नहीं है कि आपने क्या पढ़ा है, बल्कि यह भी है कि बदलती तकनीक के साथ आप कितना सीख और बदल सकते हैं. विश्व आर्थिक मंच की पस्युर ऑफ जॉन्स रिपोर्ट- 2025 के अनुसार, 2030 तक दुनिया में करीब 17 करोड़ नई नौकरियां मिलना का अनुमान है, जबकि लगभग 9.2 करोड़ नौकरियां खत्म हो सकती हैं. यानी शुद्ध रूप से करीब 7.8 करोड़ रोजगार बढ़ेंगे, लेकिन इन रोजगारों की प्रकृति पहले जैसी नहीं होगी. नौकरी रहेगी, मगर उसके लिए जरूरी कौशल बदल जाएगा. यही बदलाव शिक्षा व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती है. रिपोर्ट के मुताबिक, 2030 तक करीब 59 प्रतिशत कामगारों को नए कौशल सीखने या मौजूदा कौशल को बेहतर करने की जरूरत पड़ेगी. इसका सीधा अर्थ है कि 4 साल की डिग्री लेकर पढ़ाई खत्म मान लेने का दौर अब पीछे छूट रहा है.



असली बात यह है कि वह नौकरियां का स्वरूप बदलेगा और नए अवसर पैदा करेंगे. भारत के लिए यह बदलाव चुनौती से ज्यादा अवसर है. सरकारी आकलन के मुताबिक, 2027 तक देश को 12.5 लाख से अधिक एआई पेशेवरों की जरूरत पड़ सकती है. उद्योग जगत में भी भर्ती का पैमाना बदल रहा है. कंपनियां अब केवल यह नहीं देख रही कि उम्मीदवार के पास कौन-सी डिग्री है, वे यह भी देख रही है कि वह तकनीक का इस्तेमाल कर सकता है या नहीं, समस्या का समाधान कर सकता है या नहीं और बदलती परिस्थितियों में खुद को ढाल सकता है या नहीं. इसलिए विश्वविद्यालयों के सामने भी पाठ्यक्रम बदलने की चुनौती है.

—राम मनोहर

संपादकीय बोर्ड

प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्‍वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर	12403	-डॉ. सागर खांदेवाला									
1	2	3	4	5	6						
7					8						
9			10								
				11							12
13	14				15	16					
					17						
18		19				20					
21										22	

बाएं से दाएं

- विपत्ति या संकट का समय
- होश, चेतना शक्ति, बुद्धि
- बजाना
- गाना वह जो गाया जाए
- दहलीज, कंदरा, मूल्य
- उपाय, चाल, हकीमी
- उलहाना
- प्रकृति
- धन, खोफ
- पंच, सरसिज, उत्पल
- नाव खेने वाला
- तर, रजनी, निशा
- दिया, दीपक
- भक्ति युगीन कवियित्रों जो कृष्ण के प्रेम में दीवानी थी

ऊपर से नीचे

- रिपोर्टर
- माता, मिकदार, प्रतिष्ठा
- आदि पर आघात से उत्पन्न शब्द
- प्रबल अभिलाषा
- स्वर, ताल, लय आदि के नियमानुसार बाजों के साथ गाने की

Solution 12402

म	हा	वि	ज्ञा	ल	य	स
	ह		ज		गा	म
				ला		
का	या	त	ना	चा	ह	
	श्या	ख		झ	ट	का
मा	म	ला	गि	र	ना	र
	ह	ल	वा	ई		झ
	वा	ता	रि	स	र	ख
	र	म	चे	त	र	ज

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भागदौड़ रहेगी. कार्यक्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम होगा. आंशिक सफलता मिलेगी. शारीरिक कष्ट से मन में व्यर्थ के विचार उत्पन्न होंगे. वर्ष के मध्य में नवीन योजनाओं की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा. तीर्थ यात्रा होगी. धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी, और लगन रहेगी. वर्ष के अन्त में अतिनिकट व्यक्तियों को मदद करना पड़ेगी, जिसका परिणाम भी सुखद मिलेगा.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट तथा मन व्यथित रहेगा.

मेघ- सामूहिक कार्यों में सबकी सहमति से कार्य करें, कोर्ट कचरी के मामले सुलझेंगे. **कचरी** के कार्य में अपेक्षा आज के कार्य पर ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. **वृषभ**- दूसरों की बातों में आकर अपनों से दूरियां बना लेंगे, प्रतिपोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, आपकी उपयुक्त बात को बल मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्य योजना बनेगी. **मिथुन**- वित्तीय मामले सुलझेंगे, ऐसी कोई बात मालूम होगी, जिससे आपके बाहर जाने की योजना बनेगी, स्वास्थ्य में थकाव महसूस होगी. **कर्क**- व्यापारिक सौदेबाजी लाभदायक रहेगी, पारिवारिक आयोजनों से प्रसन्नता होगी, विवाद पर संयम रखें, खर्च की अधिकता से मन अशंत रह सकता है.

सिंह- मधुर वाणी से सबको जीत लेंगे, प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी, नई परेशानी आने से आपका महत्वपूर्ण कार्य रूक सकता है, सावधानी रखें. **कन्या**- बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता रह सकती है, जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता बढ़ेगी, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, अधिकारी आपकी मदद करेंगे. **तुला**- मित्रों की मदद से अधूरे कार्य पूरे होंगे, नई जगह पर खुद को असहज महसूस करेंगे, पुराना कार्य व्यवस्थित करें, नये काम को स्वरूप देने का प्रयास होगा. **वृश्चिक**- तनाव दूर होगा, विपरीत हालात में समझौता करना ठीक रहेगा, जिस मामले में आप प्रयास कर रहे हैं,उसमें सफलता मिलेगी, संयम रखें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला, किन्तु लम्बे कद का परिश्रमी, परोपकारी एवं न्यायप्रिय रहेगा, 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति होगी, राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे, स्वाभिमानी तथा शिक्षा दीक्षा उत्तम होगी.

धनु- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, धन लाभ के अवसर आयेंगे, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, मानसिक संतोष रहेगा. **मकर**- मित्रों की कहासुनी से दुःख होगा, भय से छुटकारा मिलेगा, लाभ होगा पर कम, लाभप्रवाही से नुकसान हो सकता है, वाद विवाद से बचें. **कुम्भ**- उच्च अध्ययन में बेहतर परिणाम मिलने की संभावना है, सुख सुविधा पर खर्च होगा, रूके मामलों में गति आयेंगी, स्वास्थ्य में ताजगी रहेगी. **मीन**- झूठ बोलकर लोग प्रभित कर सकते हैं, हक के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, ज्यादा, जोड़तोड़ से नुकसान हो सकता है, निजी मामलों को स्वयं करें.

उत्पत्कालीन ग्रह चाल

8	के.7 मृ. चं. शु.	6	शु.	5
9	शु.	10		
11	12	1	रा.	2
				मं. 3

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2083 आश्विन कृष्ण चर्तुदशी भृगुवासरे रात 8/ 57, उत्तराफल्गुनी नक्षत्रे रात 9/48, ब्रह्म योगे रात 12/50, विष्टि करणे सू.उ. 6/ 11, सू.अ. 5/ 49, चन्द्रचार कन्या, पर्व- चर्तुदशी श्राद्ध, शु.रा. 6, 8, 9, 12, 1, 4 अ.रा. 7, 10, 11, 2, 3, 5 शुभांक- 8, 0, 5.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण चर्तुदशी को उत्तराफल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से जो, चना, बाजरा, के भाव में तेजी होगी, गुड, खांड, में घटबद्द रहेगी, सोना, चांदी, की चाल में सुधार होगा, सरसों तिल, तेल, में साधरण तेजी होगी. भाग्यांक 2354 है.

SUDOKU	7535								
3				8					9
			8	6		9	5		
6	5			4				7	1
	4								2
1	2		6					9	8
			6	4		5	8		
9				1					7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरने जाे आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं हैं. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ण में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू.दे.कृ. 7534

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4